पाठ 15

लोट् लकार एवं विधिलिङ्; कथा-लोभस्य फलम्, प्रार्थना के दो श्लोक।

15.1 क्रि. लोट् लकार (आज्ञार्थक वृत्ति) का प्रयोग मुख्य रूप से निम्नलिखित संदर्भों में होता है:

i) आज्ञा या सलाह का भाव बताने के लिए,

ii) इच्छा या प्रार्थना को प्रकट करने के लिए

लोट् लकार में **भ्वादि, दिवादि, तुदादि** और **चुरादिगण** की धातुओं से अङ्ग की रचना के लिए इससे पूर्व दिए हुए नियम ही लागू होते हैं। परस्मैपद (कर्तृवाच्य) में लोट् लकार में अङ्ग के साथ निम्नलिखित अन्त्य प्रत्यय जुड़ते हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**-तु**	**-ताम्**	**-अन्तु**
मध्यम पुरुष	**--**	**-तम्**	**-त**
उत्तम पुरुष	**-आनि**	**-आव**	**-आम**

भू (होना) धातु के लोट् लकार के रूप नीचे दिए गए हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**भवतु**	**भवताम्**	**भवन्तु**
मध्यम पुरुष	**भव**	**भवतम्**	**भवत**
उत्तम पुरुष	**भवानि**	**भवाव**	**भवाम**

टिप्पणी: i) मध्यम पुरुष के एकवचन में कोई प्रत्यय नहीं लगता इसलिए अङ्ग ही क्रिया का कार्य करता है।

ii) उत्तम पुरुष में पाठ 5.2 क्रि. में दिए नियम के अनुसार **न्, व्** और **म्** से पहले **अ आ** में परिवर्तित हो जाता है। यहाँ ध्यान दें कि **लट् लकार** की तरह **लोट् लकार** में **उत्तम पुरुष** के **द्विवचन** और **बहुवचन** के रूपों के साथ विसर्ग का प्रयोग नहीं होता।

iii) निषेधात्मक **लोट् लकार** में क्रिया के साथ **मा** का प्रयोग होता है, जैसे:- **अत्र मा लिख** (यहाँ मत लिखो), **कोलाहलं मा कुरु** (शोर मत मचाओ)।

iv) लोट् लकार के **मध्यम पुरुष** में प्राय: कर्ता का लोप हो जाता है।

15.2 क्रि. आत्मनेपदी धातुओं के लोट् लकार के अन्त्य प्रत्यय नीचे दिए गए हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**-ताम्**	**-ईताम्**	**-अन्ताम्**
मध्यम पुरुष	**-स्व**	**-ईथाम्**	**-ध्वम्**
उत्तम पुरुष	**-ऐ**	**-आवहै**	**-आमहै**

लभ् धातु के लोट् लकार के रूप नीचे दिए गए हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**लभताम्**	**लभेताम्**	**लभन्ताम्**
मध्यम पुरुष	**लभस्व**	**लभेथाम्**	**लभध्वम्**
उत्तम पुरुष	**लभै**	**लभावहै**	**लभामहै**

आप यहाँ देखेंगे कि लभेताम् (**लभ् + ईताम्**) और लभेथाम् में अङ्ग और अन्त्य प्रत्यय गुण संधि के द्वारा और लभै (लभ + ऐ = लभै) में वृद्धि संधि के द्वारा जुड़े हैं।

15.3 क्रि. नीचे परस्मैपद की **कृ** (करना) धातु के लोट् लकार के रूप दिए हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**करोतु**	**कुरुताम्**	**कुर्वन्तु**
मध्यम पुरुष	**कुरु**	**कुरुतम्**	**कुरुत**
उत्तम पुरुष	**करवाणि**	**करवाव**	**करवाम**

अस् (होना) धातु के लोट् लकार के रूप आगे दिए हैं :

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**अस्तु**	**स्ताम्**	**सन्तु**
मध्यम पुरुष	**एधि**	**स्तम्**	**स्त**
उत्तम पुरुष	**असानि**	**असाव**	**असाम**

इनमें से केवल प्रथम पुरुष के एकवचन और बहुवचन का प्रयोग अधिक होता है, उदाहरण देखिए:

तथास्तु- **(तथा + अस्तु)** ऐसा हो।

सर्वे सुखिनः सन्तु—सब प्रसन्न रहें।

15.4 अ. वाक्यों को बोलकर पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

क. 1. अस्माकं देशस्य सैनिकाः युध्दे जयन्तु। 2. मोहन, अत्र आगच्छ, उपविश[1], दुग्धं च पिब। 3. तूष्णीं[2] भव, कोलाहलं मा कुरु 4. यूयं ज्ञानाय प्रश्नान् पृच्छत। 5. ये मार्गं जानन्ति[3] ते एव अस्मान् अस्मिन् वने नयन्तु। 6. ईश्वरः अस्माकम् उपरि दयां[4] करोतु। 7. सर्वेषां मङ्गलं [5] भवतु। 8. नगरे अतीव प्रदूषणम् अस्ति, अतः अहं स्वग्रामे निवसानि। 9. तौ स्वपुस्तके पठताम्। 10. सः मार्गं जानाति, अतः वयं तम् एव अनुसराम[6] 11. सा स्वपुत्रेण सह नगरं गच्छतु। 12. सर्वे बालकाः वृक्षस्य छायायां तिष्ठन्तु।

(**शब्दार्थः**- 1. बैठो, 2. **तूष्णीं भव**- चुप हो जाओ, 3. जानते हैं, 4. कृपा, 5. कल्याण, 6. पीछे चलें)

ख. 1. व्यापारे परिश्रमं कुरु, धनं च लभस्व। 2. समस्या जटिला अस्ति, यूयं परस्परं मन्त्रयध्वम्[1]। 3. वयमत्र सर्वेषां हिताय चेष्टामहै। 4. अस्माकं राष्ट्रे मनुष्याः

सुशीलाः[2] भवेयुः। 5. अहं स्वगुरून् सेवै। 6. युष्माकं सर्वेषाम् आयुः वर्धताम्। 7. सर्वे जनाः स्वजीवने मोदन्ताम्। 8. संगच्छध्व[3] संवदध्वम्। 9. त्वम् अल्पम् अपि स्वधनं बहु मन्यस्व[4]। 10. संस्कृतं सर्वेभ्यः रोचताम्[5]।

(**शब्दार्थः**—1. सलाह करो; 2. चरित्रवान्;, 3. साथ चलो; 4. मानो; 5. पसंद हो)

15.5 क्रि. विधिलिङ् (संभावनार्थक वृत्ति) का प्रयोग मुख्य रूप से नीचे दिए संदर्भों में होता है**ः**

क) इच्छा, प्रार्थना, सलाह या आशीर्वाद के लिए,

ख) संदेह या संभावना सूचित करने के लिए,

ग) संभाव्यता प्रदर्शित करने के लिए

घ) हेतुहेतुमद् वाक्यांशों में

टिप्पणीः लोट् लकार (आज्ञार्थक वृत्ति) और **विधिलिङ्** (संभावनार्थक वृत्ति) का प्रयोग कभी-कभी एक दूसरे के स्थान पर होता है। इन दोनों का प्रयोग इच्छा, परामर्श या आशीर्वाद को अभिव्यक्त करने के लिए हो सकता है। पर लोट् लकार का प्रयोग अधिकांशतः आज्ञा देने के लिए और विधिलिङ् का प्रयोग प्रायः आशीर्वाद और इच्छा की अभिव्यक्ति के लिए होता है।

विधिलिङ् के रूप बनाने के लिए **भू, तुद्, दिव्, चुर्** गण की धातुओं से अङ्ग की रचना इससे पूर्व दिए गए नियमों के अनुसार ही होती है।

परस्मैपद में विधिलिङ् में निम्नलिखित प्रत्यय जुड़ते हैं**ः**

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**-ईत्**	**-ईताम्**	**-ईयुः**
मध्यम पुरुष	**-ईः**	**-ईतम्**	**-ईत**
उत्तम पुरुष	**-ईयम्**	**-ईव**	**-ईम**

विधिलिङ् के सभी प्रत्यय **ई** से शुरू होते हैं। अब तक हमने जितने भी अङ्ग पढ़े हैं, वे सभी अकारान्त हैं। अङ्ग का **अ ई** के साथ गुण संधि से जुड़ता है और **अ** और **ई** मिलकर **ए** हो जाता है। हम आगे **पठ्** धातु के विधिलिङ् के रूप दे रहे हैं**ः**

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**पठेत्**	**पठेताम्**	**पठेयुः**
मध्यम पुरुष	**पठेः**	**पठेतम्**	**पठेत**
उत्तम पुरुष	**पठेयम्**	**पठेव**	**पठेम**

आत्मनेपद में विधिलिङ् में निम्नलिखित प्रत्यय जुड़ते हैं**ः**

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**-ईत**	**-ईयाताम्**	**-ईरन्**
मध्यम पुरुष	**-ईथा:**	**-ईयाथाम्**	**-ईध्वम्**
उत्तम पुरुष	**-ईय**	**-ईवहि**	**-ईमहि**

परस्मैपद की तरह **आत्मनेपद** में भी विधिलिङ् के सभी प्रत्यय **ई** से आरम्भ होते हैं। यहाँ भी अङ्ग के अंतिम **अ** और **ई** में संधि हो जाती है और दोनों के स्थान पर **ए** हो जाता है। **लभ्** धातु के विधिलिङ् के रूप नीचे दिए गए हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**लभेत**	**लभेयाताम्**	**लभेरन्**
मध्यम पुरुष	**लभेथा:**	**लभेयाथाम्**	**लभेध्वम्**
उत्तम पुरुष	**लभेय**	**लभेवहि**	**लभेमहि**

15.6 अ. वाक्यों को पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

1. ईश्वर: युष्मान् सर्वान् रक्षेत्। 2. स: सर्वदा शान्तिं लभेत। 3. ते जीवने मोदेरन्। 4. सैनिका: देशं रक्षेयु:। 5. त्वमधुना स्वगृहं गच्छे:। 6. हे विमले, त्वं स्वपाठं पठे:। 7. युवां चित्राणि पश्येतम्। 8. यूयं गुरो: आज्ञां पालयेत[1]। 9. अहं विद्यां च धनं च अर्जेयम्[2]। 10. आवां पितरौ नमेव। 11. वयं देशभक्ता: भवेम। 12. किं वयम् अत्रैव तिष्ठेम? 13. न, यूयं कार्यालयं गच्छेत। 14. अद्य प्रेक्षागृहे[3] कालिदासस्य नाटकस्य अभिनय: अस्ति। 15 आवां तद् द्रष्टुं गच्छाव:। 16. किं वयमपि आगच्छेम? 17. आम्, अवश्यम् आगच्छत। 18. कालिदासस्य एतत् नाटकम् अतीव मनोहरम्। 19. सर्वाणि मित्राणि सहैव गच्छेयु:।

(**शब्दार्थ:**- 1. पालन करो, 2. कमाऊँ, प्राप्त करू;, 3. नाटयशाला में)

15.7 अ. नीचे दी गई कहानी को पढ़िए और उसका हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

लोभस्य फलम्

एकस्मिन् वने एको वृध्द: व्याघ्र: वसति स्म। तस्मिन् वने एक: तडाग:[1] आसीत्। तडागस्य निकटे एव एक: मार्ग: आसीत्। एकदा स: वृध्द: व्याघ्र: स्नानं[2] कृत्वा[3] तडागस्य तीरे अतिष्ठत्[4]। मार्गे बहव: पथिका:[5] गच्छन्ति स्म। व्याघ्र: तान् पथिकान् अवदत्- भो: पथिका:, मम समीपे आगच्छत। अहं हिंसको[6] व्याघ्र: नास्मि। न अत्र भयस्य किमपि कारणम्। मम हस्ते एकं सुवर्णकङ्कणं[7] दानाय[8] अस्ति। अस्य ग्रहणं[9] कुरुत। व्याघ्रस्य वचनै: लुब्ध:[10] एक: पथिक: अचिन्तयत्- भाग्येन[11] एव एतत् संभवति। तथापि[12] स: व्याघ्रात् भीत:[13] आसीत्। स: व्याघ्रम् अवदत्- त्वं तु स्वभावेन क्रूर: पशु:। त्वयि विश्वास: कथं संभवति?

(**शब्दार्थ:** 1. तालाब, 2. स्नान, 3. करके, 4. बैठ गया, खड़ा हो गया, 5. यात्री, 6.

हिंसा करने वाला, 7. सोने का कंगन, 8. देने के लिए, दान के लिए, 9. स्वीकार, 10. ललचाया हुआ, 11. भाग्य से, 12. फिर भी, 13. डरा हुआ।)

व्याघ्रः अकथयत्- इदं सत्यं यत्[1] व्याघ्राः स्वभावेन क्रूराः भवन्ति। यौवने[2] अहमपि अति क्रूरः आसम्। अहं कारणं विना एव बहूनां पशूनां हिंसाम्[3] अकरवम्। तदा एको धार्मिको जनः माम् उपदेशम् अकरोत्- हिंसा पापाय भवति। दया पुण्याय भवति। त्वम् इदानीं वृध्दः। अस्याम् अवस्थायां पुण्यस्य अर्जनम्[4] आवश्यकम् इति। तस्य धार्मिकजनस्य उपदेशात् अहं प्रतिदिनम् एकस्य सुवर्णकङ्कणस्य दानं करोमि। अद्य भवान् अस्य कङ्कणस्य ग्रहणं करोतु। किन्तु ग्रहणात् पूर्वं स्नानम् आवश्यकम्। अतः भवान् अस्मिन् तडागे स्नानाय प्रविशतु। अत्यधिको लोभी[5] सः पथिकः स्नानाय तडागे प्राविशत्। किन्तु सः तडागस्य पङ्के[6] निमग्नः[7] अभवत्। तदा व्याघ्रः तम् अभक्षयत्।

(**शब्दार्थः** 1. कि, 2. जवानी में, 3. हत्या, वध, 4. कमाना, 5. लालची, 6. कीचड़ में, 7. निमग्नः अभवत्- डूब गया।)

15.8 प. नीचे दिए श्लोकों को पढ़िए। इनमें **लोट् लकार** और **विधिलिङ्** का प्रयोग हुआ है। इनमें सार्वभौम शान्ति और प्रसन्नता के लिए प्रार्थना हैः

क. सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः[1]
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्[2] भवेत्॥

ख. सर्वः तरतु दुर्गाणि[3] सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामान्[4] अवाप्नोतु[5] सर्वः सर्वत्र नन्दतु6॥

(**शब्दार्थः**- 1. रोग रहित, 2. दुखी, 3. कठिनाइयों को, 4. इच्छाओं को, 5. प्राप्त करें, 6. प्रसन्न रहें)।

अभ्यासों के उत्तर

15.4 क. 1. हमारे देश के सैनिक युध्द में जीतें। 2. मोहन, यहाँ आओ, बैठो और दूध पियो। 3. चुप हो जाओ, शोर मत मचाओ। 4. आप लोग ज्ञान पाने के लिए प्रश्न पूछें। 5. जो लोग रास्ता जानते हों वे ही इस जंगल में हमारा मार्गदर्शन करें। 6. भगवान् हम पर दया करे। 7. सबका भला हो। 8. शहर में बहुत अधिक प्रदूषण है इसलिए मैं (सोचता हूँ कि) अपने गाँव में रहूँ। 9. वे (दोनों) अपनी पुस्तकें पढें। 10. वह रास्ता जानता है इसलिए हम उसका ही अनुसरण करें। 11. वह (स्त्री.) अपने पुत्र के साथ शहर जाए। 12. सब लड़के पेड़ की छाया में बैठें।

ख. 1. व्यापार में मेहनत करो और धन कमाओ। 2. समस्या कठिन है , आप लोग आपस में सलाह करें। 3. हम यहाँ सबके हित के लिए प्रयत्न करें। 4. हमारे राष्ट्र में लोग सच्चरित्र हों। 5. मैं अपने गुरुओं की सेवा करूँ। 6. आप सबकी आयु बढ़े। 7. सब लोग अपने जीवन

में प्रसन्न रहें। 8. सब साथ-साथ चलें, सहमति से बोलें। 9. तुम अपने थोड़े-से धन को ही बहुत समझो। 10. संस्कृत भाषा सबको रुचिकर लगे।

15.6 अ. 1. ईश्वर आप सबकी रक्षा करे। 2. उसे हमेशा शान्ति मिले। 3. वे जीवन में प्रसन्न रहें। 4. सैनिक देश की रक्षा करें। 5. तुम अब अपने घर जाओ। 6. हे विमला, तुम अपना पाठ पढ़ो। 7. तुम दोनों चित्रों को देखो। 8. सब गुरु की आज्ञा का पालन करें। 9. मैं विद्या और धन कमाऊँ। 10. हम दोनों माता-पिता को नमस्कार करें। 11. हम देशभक्त हों। 12. क्या हम यहीं ठहरें? 13. नहीं, तुम सब कार्यालय जाओ। 14. आज नाटयशाला में कालिदास के नाटक का अभिनय है। 15. हम दोनों उसे देखने के लिए जा रहे हैं। 16. क्या हम भी आएँ? 17. हाँ, अवश्य आओ। 18. कालिदास का यह नाटक बहुत सुन्दर है। 19. सब मित्र साथ ही चलें।

लोभ का फल

15.7 अ. एक वन में बूढ़ा बाघ रहता था। उस वन में एक तालाब था। तालाब के पास ही एक रास्ता था। एक बार वह बूढ़ा बाघ नहा कर तालाब के किनारे बैठ गया। रास्ते से बहुत-से यात्री जा रहे थे। बाघ ने उन यात्रियों से कहा—हे यात्रियों, मेरे पास आओ। मैं क्रूर बाघ नहीं हूँ। (इसलिए) डर की कोई बात नहीं है। मेरे हाथ में एक सोने का कंगन दान में देने के लिए है। इसे ले लो। बाघ की बात से ललचाए हुए एक यात्री ने सोचा ऐसा भाग्य से ही होता है। फिर भी वह बाघ से डरा हुआ था। वह बाघ से बोला—तुम तो स्वभाव से ही क्रूर प्राणी हो। तुम्हारे पर कैसे विश्वास किया जा सकता है?

बाघ ने कहा—यह सच है कि बाघ स्वभाव से क्रूर होते हैं। जवानी में मैं भी बहुत क्रूर था। मैं बिना कारण पशुओं की हिंसा किया करता था। तब एक धार्मिक व्यक्ति ने मुझे उपदेश दिया—हिंसा से पाप लगता है। दया से पुण्य प्राप्त होता है। तुम अब बूढ़े हो गए हो। इस आयु में पुण्य कमाना आवश्यक है। उस धार्मिक व्यक्ति के उपदेश के कारण मैं हर रोज एक सोने के कंगन का दान करता हूँ। आज आप इस कंगन को ले लें। परन्तु इसे लेने से पहले स्नान करना आवश्यक है। इसलिए आप स्नान करने के लिए इस तालाब में प्रवेश करें। वह अत्यधिक लालची यात्री स्नान के लिए तालाब में घुस गया। परन्तु वह तालाब के कीचड़ में डूब गया। तब बाघ ने उसको खा लिया।

15.8 क. सब लोग सुखी हों, सब लोग रोगरहित हों। सब लोगों का कल्याण हो। कोई भी व्यक्ति दुःखी न हो।

ख. सब लोग कठिनाइयों को पार करें। सबको चारों ओर आनन्द ही आनन्द दिखाई दे। सबकी इच्छाएँ पूरी हों। सब लोग सभी जगह प्रसन्न रहें।